

तनने की क्रांति  
मनुष्य सीधा क्यों चलता है



बहुत पहले मनुष्य चौपायों की तरह चारों हाथ पैर टेक कर चलते थे। मनुष्य खरगोश, चीते और गैन्डों से भी तेज़ थे। दूसरे अंगों की तुलना में हाथ-पैर उनके ज़्यादा नज़दीक थे। उनके लगभग समान काम करने वाले जोड़ थे। कंधे और कूल्हे ; कोहनी और घुटने ; टखना और कलाई, पैर और हाथ – सभी पांच पंजों और उंगलियों पर समाप्त होते थे और हर उंगलियों पर नाखून होते थे। हाथ और पैर की उंगलियों के व्यवस्था भी एक जैसी थी। उन दिनों अंगूठा दूसरी उंगलियों से ज़्यादा नज़दीक था वैसे ही जैसे बड़ी उंगली। बांह और पैर एक दूसरे के सबसे नज़दीकी रिश्तेदार कहलाते थे। यह शरीर को चलाने में एक दूसरे की मदद करते थे। चाहे वह बाज़ार, पहाड़, दुकान कहीं भी जाना हो। यहाँ तक कि पानी में भी वे तैरने, गोता

लगाने और बहने में शरीर की मदद करते थे। इस तरह उनका रिश्ता लोकतांत्रिक और समानता पर आधारित था। ये दूसरे अंगों के उत्पाद भी काम में लिया करते थे जैसे मुंह से आवाज़, कानों से सुनना, नाक से सूंघना, यहाँ तक कि आंखों से नज़र भी उनकी लय और अचूक तालमेल से दूसरे अंग ईर्ष्या करते थे।

उन अंगों को अपनी प्रतिमा बाँह और पाँव को देने में क्षोभ होता था। अपनी ईर्ष्या में अंधे होकर वे यह भूल गए कि यह पाँव और हाथ ही हैं, जो उन्हें जगह जगह घुमाते हैं। इन अंगों ने हाथ पैरों की जोड़ी के खिलाफ षड्यंत्र रचा। जीभ ने मस्तिष्क से योजना ली और उस पर तुरन्त अमल किया। उसने हाथ पाँव की शक्ति को लेकर मुखर विरोध शुरू किया। कि आखिर कौन ज़्यादा शक्तिशाली है? हाथ पैरों ने जिन्होंने कभी इसकी चिन्ता नहीं की थी कि दूसरे अंग क्या करते हैं या कर सकते हैं, अब मुँह से आवाज़ उधार लिया और यह दावा करने लगे कि वे दूसरों से ज़्यादा शक्तिशाली हैं। यह तुरन्त इसमें बदल गया कि कौन ज़्यादा नफ़ीस है। बाँह ने तुरन्त हाँकना शुरू किया कि उसकी ऊंगलियाँ ज़्यादा लम्बी और पतली है, और पंजों के नाटे और मोटे होने पर खिल्ली उड़ाने लगे। पलट कर पंजों ने भी पतली ऊंगलियों को भूखमरा रिश्तेदार कहकर मज़ाक उड़ाना शुरू किया। यह कई

दिनों तक चला, यहां तक कि उनके मिलकर काम करने की क्षमता पर प्रतिकूल असर पड़ा। अंततः पूरा मामला शक्ति के सवाल पर आ टिका।

वे बीच बचाव के लिए दूसरे अंगों के पास पहुंचे। जीभ ने एक प्रतियोगिता रखने का सुझाव दिया – वाह, क्या बात है – सभी सहमत हुए लेकिन क्या प्रतियोगिता? कुछ ने दंगल करवाने का सुझाव दिया – हाथ पैर के बीच दंगल दूसरों ने तलवारबाज़ी, बाज़ीगरी, दौड़ और शतरंज या चैकर्स जैसे खेलों का सुझाव दिया मगर इन सभी को यह कह कर इन्कार किया गया कि यह सब दूसरे अंगों के प्रति अन्यायपूर्ण है। एक बार फिर जीभ, दिमाग से सोच उधार लेकर सरल समाधान के साथ सामने आई। कि हर अंग बारी बारी से अपनी चुनौती से निपटेंगे। हाथ पाँव मान गये। यह प्रतियोगिता एक नदी किनारे की खाली जगह पर हुई। सभी अंग किसी भी ख़तरे या अचानक आने वाली स्थिति को लेकर सावधान हो गए। इस तरह अब ये अंग आंतरिक संघर्ष में जुट गए। आँखें दूर दराज़ के छोटे से ख़तरे को भाँपने के लिए तैयार हो गए, कान किसी भी दूरी से आने वाली धीमी से धीमी आवाज़ सुनने में लग गए, नाक ने अपने नथुनों को साफ़ कर लिया कि ख़तरे की कोई भी गंध सूँघ ले।

जीभ चिल्लाने को तैयार थी कि – ख़तरा। हवा ने प्रतियोगिता की ख़बर जंगल भर में फैला दी चौपाये सबसे पहले इकट्ठा हुए, कई बड़े चौपाये

हरी डाल पकड़े शांति का संदेश जैसा दे रहे थे यह तेन्दुआ, चीता, शेर, गैन्डा, लकड़बघ्घा, हाथी, जिराफ़, ऊँट, लम्बी सींग वाली गाय, छोटी सींग वाले भैंस, तरह तरह के मृग, ख़रगोश, छछून्दर और चूहों की रंगबिरंगी तमाशबीन भीड़ थी। जलचरों में दरियाई घोड़ों, मछलियों और मगरमच्छों ने अपना ऊपरी धड़ किनारे से टिका लिया था उनका बाकी का शरीर पानी में डूबा हुआ था। दोपायों में शुतुरमुर्ग, गिनीमुर्ग और मोर उत्तेजना से पंख फड़फड़ा रहे थे। चिड़ियाँ पेड़ पर चहचहा रही थीं, झींगुर जाने लगे थे, मकड़ियाँ, कृपियां और कनखजूरे ज़मीन पर या पेड़ पर सरकने लगे। गिरगिट छुपता छुपाता, सावधानी से चलता आ गया, जबकि छिपकली फुरती से इधर उधर भागने लगी। बंदर, गोरिल्ले और काले चिम्पान्ज़ी डाल से डाल पर कूदने फांदने लगे। यहाँ तक कि पेड़ भी उनके सम्मान में डोलकर और झुककर फिर खड़े हो गए थे। मुँह ने जाने के साथ प्रतियोगिता शुरू की –

- “हम खुश रहने को ये करते हैं
- “हम खुश रहने को ये करते हैं
- “हम खुश रहने को ये करते हैं
- क्योंकि हम सब उस एक प्रकृति से आये हैं”

बांह और पाँव ने परिणाम को गरिमापूर्ण ढंग से मानने की शपथ ली – कोई मिज़ाज़ नहीं, बहिष्कार की धमकी नहीं हड़ताल या धीमे कार्य की बात नहीं।

बाँहों ने पहली चुनौती दी –उन्होंने एक लकड़ी का टुकड़ा ज़मीन पर फेंका। पाँवों को दायां बायां या एकसाथ उस टुकड़े को उठाकर फेंकना था। दोनों पाँवों चुनौती के दौरान इस बारे में सलाह कर सकते थे कि एक या दोनों पंजों को कैसे प्रभावी ढंग से काम में लिया जाए। उन्होंने उस टुकड़े को पलटने की कोशिश की, धक्का दिया, उन्होंने हर सम्भव तरीका अपनाया, पर वे उसे सही ढंग से नहीं उठा सके। उसे हिलाने की कोशिश में वे टुकड़े को लात मार कर कुछ इन्च ही उछाल सके। यह देख, उंगलियों ने मुँह से आवाज़ उधार लेकर हंसने लगीं। चुनौती देने वाले बाँहों ने जैसे सौन्दर्य प्रतियोगिता में भाग लेते हुए अपनी खूबसूरती को दिखाते हुए टुकड़े को उठाया और फेंक दिया। उन्होंने उसे दूर जंगलों में फेंका। यह देखकर दूसरे प्रतियोगी और दर्शकों ने सराहना की ध्वनि की। उन्होंने और भी कौशल दिखाया – जैसे– चावल की कटोरी से कंकर चुनना ; सुई में धागा डालना, लकड़ी उठाने के लिए पुली बनाना। उन्होंने भाले बनाए और दूर फेंके।

यह कार्य ऐसे थे जिसके बारे में पंजे सिर्फ सपना ही देख सकते थे। पाँव सिर्फ चुपचाप बैठकर अपने इस रिश्तेदार की लोच और खूबी को सराह ही सकते थे। दर्शकों की बाँहों ने अपने साथी बाँहों की प्रशंसा और एका दिखाते हुए तालियों से वातावरण गुँजा दिया। इससे पाँव बुरी तरह परेशान हो गए। मगर वह हार मानने को तैयार नहीं थे ; हालांकि वे थोड़े मायूस

लग रहे थे, पर जीतने की चुनौती को लेकर उधेड़बुन करते हुए उनके बड़े पंजे रेत में दायरा बना रहे थे। अन्ततः अब पाँव और पंजों की बारी थी चुनौती देने की। उन्होंने कहा कि उनका वाला सरल है। हाथों को शरीर को एक दायरे से दूसरे दायरे में ले जाना है। धमण्डी ऊंगलियों ने सोचा, क्या बेवकूफी भरी चुनौती है – यह देखने लायक दृश्य था। शरीर का सब कुछ उल्टा पुल्टा हो गया था। हाथों ने ज़मीन को छुआ, आंखें जमीन के निकट थीं, इस वजह से उनके देखने के कोण में बड़ी रुकावट आ गई थी, धूल नाक में घुस गई थी और छींक शुरू हो गई थी। पाँव और पंजे, हवा में उठे हुए थे। भीड़ चिल्लाई पाँव ऊपर और गीत गाना शुरू कर दिया –

पाँ ऊपर, चिन्ता नहीं  
 पाँव ऊपर  
 पाँव के साथ चलो  
 हवा में उड़ो

पर भीड़ का ध्यान बाँहों और हाथों की तरफ था। जो अंग थोड़ी देर पहले शानदार गति और हुनर दिखा रहे थे, अब कुछ दूर भी नहीं जा पा रहे थे। कुछ कदम, और हाथ दर्द से ऐंठ गए और थरथराने लगे और शरीर गिर गया थोड़ा रूक कर उन्होंने फिर कोशिश की। इस बार उन्होंने जमीन को बेहतर ढंग से पकड़ने के लिए ऊंगलियाँ फैलाई, पर सिर्फ अंगूठा ही फैलकर

रह गया। उन्होंने कलाबाज़ी करने का प्रयत्न किया, मगर उसमें पाँवों की भी ज़रूरत होने के कारण यह तरीका ख़ारिज कर दिया गया। अब पंजों के हंसने की बारी थी। उन्होंने कंठ से घरघराती आवाज़ उधार ली जो अंगुलियों की महीन आवाज़ से उल्टी थी। यह सुनकर बाहें नाराज़ हो गईं और एक बार फिर शरीर को उठाने की कोशिश की। वे एक कदम भी नहीं उठा सकीं। थक कर हाथों और ऊंगलियों ने हार मान ली। पाँव अपने खेल कौशल को दिखाकर खुश थे। उन्होंने कदमताल किया, तेज़ चले, भागे, कुछ ऊंची छलांगें लगाईं, लम्बे कूदे और शरीर को एकबार भी गिरने नहीं दिया।

दर्शकों के पाँव उनकी सराहना में एक साथ मिलकर ज़मीन पर थपकने लगे। बाँहों ने अपने हाथ फैलाकर इस 'अनखेलांग भावना' का विरोध किया। वे बड़ी आसानी से भूल गए कि यह खेल उन्होंने ही शुरू किया था।

दर्शकों सहित सब ने बाँहों के बारे में एक चीज़ देखी कि जब शरीर को उठाने के लिए अंगूठा फैला था, तब वह उंगलियों से अलग ही बना रहा। प्रतिद्वन्द्वी अंग जब हंसने को ही थे कि उन्होंने और कुछ भी देखा – अंगूठा उंगलियों से अलग रहकर भी उन्हें कमज़ोर नहीं बना रहा था बल्कि उंगलियों की पकड़ इससे और मज़बूत हो गई थी। यह क्या – विकृति ही आकृति की शक्ति बन गई? अंगों के बीच विजेता घोषित करने को लेकर पाँच दिन तक बहस चली। क्योंकि अंगुलियाँ और पंजे पांच ही होते हैं। पर बड़ी कोशिश

की बाद भी वे एक विजेता घोषित नहीं कर सके। सभी अंगों ने अपनी क्षमता के हिसाब से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था। एक दूसरे की मदद के बिना वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। तब एक दर्शनिक अंदाजे लगाने शुरू हुए शरीर आखिर है क्या? उन्होंने पूछा और फिर उन्हें समझ आया कि शरीर सब अंग को मिलाकर ही बनता है यह समावेशी है – सभी अंगों को ठीक से अपना काम करना होता है ताकि सभी ठीक से काम कर सकें। भविष्य में ऐसी प्रतियोगिता और ठकराव से बचने के लिए निर्णय लिया गया कि शरीर सीधे तन कर चलेंगे। पैर मजबूती से ज़मीन पर और हाथ हवा में। शरीर इस निर्णय से खुश था, मगर शिशुओं के लिए चौपाये की तरह चलने को स्वीकार किया गया ताकि वे अपना मूल न भूलें। काम का बंटवारा हो गया। पाँ गन्तव्य तक ले जाएंगे, पर वहाँ पहुँच कर हाथ औज़ार आदि थामने का काम सम्हाल लेंगे। पाँवों ने भारी काम लिया और हाथों ने वातावरण बनाने का महीन काम पकड़ा ताकि भोजन मुँह तक पहुँच सके। मुँह, और उससे भी आगे दाँत उस भोजन को चबाकर कंठनली से पेट तक पहुँचाएंगे। पेट भोजन का सार तत्व खींचकर शिराओं के ज़रिये यह पोषण शरीर के हर कोने तक पहुँचाएगा। बाद में शरीर अपनी निकासी व्यवस्था से बचे हुए मल को बाहर निकाल देगा, जहाँ उसे खाद का रूप मिलेगा। इस खाद वाली मिट्टी में पौधे बढ़ेंगे और उनमें फल लगेंगे। हाथ उनमें से कुछ फल तोड़ेंगे और मुँह में



रखेंगे। ओ—हाँ—जीवन चक्र। यहाँ तक खेल और मनोरन्जन भी इसके अनुसार विभाजित हुए। गाना, बोलना, हंसना मुँह के लिए रखा गया। दौड़ और फुटबॉल पाँव के लिए। बेसबॉल और बास्केट बॉल हाथों के लिए रखा गया, हालांकि दौड़ने का काम पाँव ही करेगा। खेल में पाँवों को अधिकांश मैदान मिल गया। इस उचित श्रम वितरण ने शरीर को एक मज़बूत और सुचारु मशीन बना दिया। इस तरह दूसरे जानवरों से गुणवत्ता और मात्रा में यह आगे निकल गया।

फिर भी अंगों को महसूस हुआ कि इस व्यवस्था में भी टकराव संभव है। हवा में उठा हुआ सर ज़मीन पर जमे पैरों से खुद को ऊंचा समझ सकता है। सर खुद को मालिक और अन्य अंगों को नौकर मान सकता है। उन्होंने इसीलिए इस पर ज़ोर दिया कि सर और उससे नीचे के सभी अंग शक्ति के लिहाज से समान हैं। इसे स्पष्ट करने के लिए सोचा गया कि किसी भी अंग में दर्द या खुशी को सभी अंग महसूस करेंगे।

Bio:

Saudamini Deo is a writer, translator, photographer from Jaipur, India. Her translation of Bhuwaneshwar's short stories 'Wolves and other stories' is forthcoming from Seagull Books.